मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 12

MTT–045

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

एम.टी.टी.–045 : हिंदी–सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 20

(क) समाचारों के शीर्षक का महत्व बताते हुए, समाचार शीर्षकों का वर्गीकरण कीजिए। हिंदी समाचारों का सिंधी अनुवाद करते कौन–सी सावधानियाँ बरतना आवश्यक है ? सोदाहरण चर्चा कीजिए।

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

अथवा

(ख) काव्यानुवाद का महत्व समझाते हुए, हिंदी से सिंधी काव्यानुवाद की चुनौतियाँ उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखते हुए उनका हिंदी में प्रयोग कीजिए : 10

(i) संक्षिप्त

(ii) अतिरिक्त

(iii) शपथपत्र

(iv) विश्लेषण

(v) क्षमता

(vi) जनगणना

(vii) अध्यक्ष

(viii) स्पष्टीकरण

(ix) प्रशंसनीय

(x) गोपनीय

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखते हुए उनका सिंधी में प्रयोग कीजिए : 10

(i) ड॒िहाड़ी

(ii) अक्सु

(iii) दस्तावेज़

(iv) इतिलाउ

(v) सबबु

(vi) रिथा

(vii) पचिरो

(viii) कणिक

(ix) आजियां

(x) हिदायत

4. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। इनमें से किन्हीं **पाँच** का हिंदी और सिंधी में अर्थ बताते हुए हिंदी और सिंधी के वाक्यों में अलग–अलग प्रयोग कीजिए : 15

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

हिंदी शब्द	सिंधी शब्द
अर्थहीन	दस्तख़त
पूर्वानुमान	हाणोको
संशोधन	शिकिलि
मुहावरा	उपाउ
सुविधा	तर्जुमो

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** अनुच्छेदों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 2×15=30

(क) दिनकर अत्यंत उग्र विचारों के राष्ट्रीय कवि हैं। गाँवों की जिस गरीबी का अनुभव उन्हें अपनी किशोरावस्था मे हुआ था, उसकी बहुत ही मार्मिक कविताएँ उन्होंने लिखीं। उन्होंने धीरे-धीरे यह समझा कि यह विपन्नता उपनिवेशवाद और सामंतवाद के गठबंधन से और भयानक हुई है। उपनिवेशवाद के तहत उन्हें न केवल राजनीतिक पराधीनता का ही एहसास हुआ वरन् राष्ट्रीय अस्मिता के भी लोप होने का बोध अत्यंत उत्कट रूप से हुआ। उनके विद्रोही मन की वास्तविक रचना 1920 ई. के बाद उग्र होते हुए स्वाधीनता संग्राम के

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

बीच हुई। उनका युवा मन बहुत ही उग्र हो रहा था और गांधीवाद के युधिष्ठिरपन में उनका मन रम नहीं पाता था। दूसी ओर उन पर लोकमान्य तिलक के संघर्षशील जीवन–दर्शन (गीता–रहस्य) का प्रभाव पड़ा और उन्हें चंद्रशेखर आज़ाद और भगत सिंह आदि के सशस्त्र संघर्ष में इस अति–अपमानजनक उपनिवेशवाद से मुक्ति का वास्तविक मार्ग दिखाई दे रहा था। सोवियत रूस में लेनिन की मार्क्सवादी क्रांति का भी उनके विचारों पर काफ़ी प्रभाव पड़ा था। इस कारण वे सामाजिक विषमता को ध्वस्त करने के लिए मार्क्स के वामपंथी विचारों पर भी मुग्ध हो रहे थे। अत: उनकी कविता में बहुत की आवेगमय राष्ट्रीय और सामाजिक चेतना मिलती है। उनमें नजरुल इस्लाम से अधिक उग्र राष्ट्रीय चेतना और उपनिवेशवाद विरोध की भावना मिलती है। वे हिंदी के ही नहीं वरन् भारत की किसी भी भाषा के आधुनिक काव्य में प्रखर, संघर्षशील राष्ट्रीय धारा के सबसे बड़े कवि हैं।

(ख) लोक–कथा की विधा बहुत पुरानी और लोकप्रिय है। लोक–कथाओं के नाना रूप हैं। सोते समय बच्चों की

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

जिद पर उनके मनोरंजन के लिए सुनाई जाने वाली लोक–कथाएँ एक प्रकार की हैं तो तीज–त्यौहार पर सुनी–सुनाई जाने वाली दूसरे प्रकार की। कुछ लोक–कथाएँ 'एक था राजा और एक थी रानी' की शैली में शुरू होती हैं तो कुछ जंगल में 'एक शेर था' या 'एक भालू था' से। राजा–रानी की कहानियाँ भी जनसाधारण के दु:ख–सुख के इर्द–गिर्द ही चलती है, उनमें भी विपदा के बादल गहराते हैं और विपदा चाहे जितनी लंबी हो उसका अंत होता है। सुख के पल आते हैं और कहानी का अंत, जैसे उनके दिन फिरे वैसे सबके फिरें, से होता है। विपत्ति में डूबते–उबरते मन को ऐसी लोक–कथाएँ मनोरंजन और आशा के साथ एक नैतिक संदेश प्रदान करती हैं।

ऐसी ही एक कहानी उस अकेली चिड़िया की है जिसका दाना चक्की के खूँटे में अटक गया और उसे पाने के लिए शांति और धैर्य के साथ उसने लंबी कोशिश की। उसके सामने जीवन–मरण का प्रश्न था। उसने किसी तरह से तो एक दाना जुटाया था, जब

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

चक्की में उसे दलने गई तो दाना चक्की के खूंटे में अटका रह गया। अब क्या खाए, क्या पीए और क्या लेकर पदरेस जाए। वह बढ़ई के पास गई, और बढ़ई से खूँटा चीरने को कहा ताकि दाना बाहर निकल जाए। बढ़ई ने मना कर दिया तो राजा के पास गई, 'राजा, राजा बढ़ई को दंड दो।' राजा ने उसकी बात अनसुनी कर दी तो रानी से राजा को छोड़ने की दरख्वास्त कर डाली। रानी ने मना किया तो साँप के पास पहुँची–'रानी को डँसो', साँप ने मना किया तो लाठी से गुहार लगाई–'साँप को मारो।' लाठी ने मना किया तो आग से कहा, 'लाठी को जला दो।' आग के मना करने पर सागर से मिन्नत की, 'आग को बुझा दो।' सागर ने मना किया तो हाथी से कहा, 'सागर को सूँड में भरकर पी जाओ।' हाथी ने मना किया तो चींटी से कहा, 'हाथी की सूँड़ में घुस कर उसे काट–काटकर बेदम कर दो।'

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

(ग) **विदेशों में स्थित भारतीय कार्यालयों के लिए कार्यक्रम**

(i)	हिंदी में पत्राचार (भारत/ विदेश स्थित केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के साथ)	50%
(ii)	फाइलों पर हिंदी में टिप्पण	50%
(iii)	वर्ष के दौरान नराकास की आयोजित बैठकों की संख्या (नराकास का गठन किसी नगर में केंद्र सरकार के 10 कार्यालय या अधिक होने की स्थिति में किया जाए)	प्रत्येक छमाही में एक बैठक
(iv)	वर्ष के दौरान (विभागीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति) की आयोजित बैठकों की संख्या (विकास का गठन कार्यालय-अध्यक्ष की अध्यक्षता में किया जाए।)	प्रत्येक तिमाही में एक बैठक

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

(v)	कंप्यूटरों सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी उपलब्धता	100%
(vi)	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी/ आशुलिपिक	प्रत्येक कार्यालय में कम से कम एक
(vii)	दुभाषियों की व्यवस्था	प्रत्येक मिशन/दूतावास में स्थानीय भाषा से हिंदी में और हिंदी से स्थानीय भाषा में अनुवाद के लिए दुभाषिए की व्यवस्था की जाए।

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

6. निम्नलिखित में से किसी एक अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15

(क) हैदराबाद जहिड़ी विक्टोरिया गाडी ब॒ियो किथे ड॒िठी अथव? छा न उन में तन्दुरुस्त ऐं शानदार घोड़ो ब॒धलु हूंदो हो। फलक सां हिणकार करे, पुछु फेराए इएं निहारींदो हो, ज॒णु त घोड़ो न पर को राजा आहे! गाडीअ वारा बि खेसि ड॒ाढो भाईंदा हुआ। पखणु लगाए संदसि चमडी चिमकाईंदा हा ऐं ताजो गाहु खाराए खेसि रिष्ट-पुष्ट बनाईंदा हुआ। गाडीअ अंदर मां, मुंहिंजूं भेनरु, अमी ऐं वडा ब॒ भाउर ऐं गाड॒ीअ वारे सां ब॒ नन्ढा भाउर, मोटी ऐं नारायणु। असीं छोकिरियूं अखियूं पूरे कननि भरिसां लंघन्दड़ हवा सां रिहाणियूं करण जो लुत्फु वठन्दियूं हुयूंसीं ऐं मथे ब॒ वेठल, वारे सां चहबूकु हथ में खणी पेर सां घिंडिणी वज॒ाए, दोस्तनि अग॒ियां पंहिंजो रउबु ड॒ेरवारींदा हुआ। मार्केट परिसां लंघन्दे को छोकरो गाड॒ीअ जे पुठियां वारीअ सीट (जग॒हि) ते पेटु रखी चढन्दो हो त ब॒िया छोकरा पुकारींदा हुआ, “गाड॒ीअ वारा! पुठियां छोकरो।” ऐं गाड॒ीअ वारो उमालक चहबूकु हथि करे “जीट” वारो आवाजु करे, जोर सां चहबूकू फेराए चवंदो हो “खबरदार! खबरदार!”

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

(ख) कविता :

3.1 शीशे जा घर

शहरु सजोई पथर पथर,
त बि मूं जोड़या शीशे जा घर!
जिस्म–मनोहर महल मुनारा,
रूह भयानक खंडहर खंडहर!
कमिरे में छा छा थी गुज़िर्यो ?
चोरनि था चप छो न दर्यूं दर ?
केरु ईंदो, छो ईंदो मूं वटि ?
छा लइ अखि थी फड़िके हर हर ?
ककर न, छांव न बूंद, बरनि में,
त बि बांहूं फहिलायूं थूहर!
तुहिंजी लुड़कनि भिनड़ी अखि आ
या घाघर में सहसें सागर ?
गाल्हि सियासी गूढ़ गुझारत,
हिक हिक वाईअ में सौ सौ वर!
भूंइ चंड ते कई चढ़ाई,

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

अखि न पटी आ अञा बि अंबर!

वक़्त वक़्त जी आ ब॒लिहारी,

भौंकनि कुतनि पुठ्यां कलंदर!

जिए पेई सिन्ध अञा भी,

मरी खपी व्या सवें सिकंदर!

× × × × ×

Downloaded from www.IGNOUBABA.com